

ह. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—ः हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक प १६२ (३६२)
ग्रंथ नाम पट्टेपाण बाडी.

विषय मराठी काव्य.



"Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Phule and the Dashwantrao Chavhan Prakashan, Mumbai".

मराठी

हराहरीं पदार्थका॑



तुकाराम, राजावाडे संस्कृत मंडळ

अग्रेक कवीने अभिन्न-

मराठी

कांव

✓

हुरदारी

पद हिप्पें



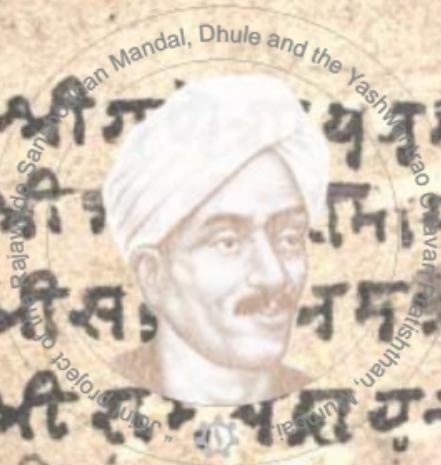
ताम्हन
के बाय
उत्तर
सावंतवार

६३६ हिप्पें
जाति-जाति-

(1)

"॥४८॥

॥४८॥ यजुर्मः ॥
गायत्री ॥ तिमिनमः ॥
॥४९॥ नमः ॥
॥५०॥ भूषयनमः ॥
॥५१॥ श्रीसावायनमः राम ॥
॥५२॥ श्रीसरस्वत्येनमस्तरस्वति
॥५३॥ यायनेषः ॥
॥५४॥ श्रीसंदर्भारतमित्रसव



Digitized by the
Rajawade Samitiyan Mandal, Dhule and the
Yashwantrao Chavhan Research Foundation.

॥ नाम है पहला जन कर्तीरे ॥५॥ वे
॥ ददि महिला कुनै मन बहुति स
॥ हिता धर्म कुमन आयुर्वेय व्यथ
॥ रुणि पाव श्रीकृष्ण कर्ते कुरीरे
॥ म०३॥ मरका मिनी परधना सि
॥ विषय विषय भव भना हि ॥ जपु
॥ निट पुरी मं रन कुनि या
॥ पड़ सीकर ॥ ॥२५॥ भरनि
॥ सह छ संत ॥ भरनि
॥ रंग ॥ ने कर ॥ भरनि
॥ कुकुक आभरवरी ॥३५
॥ पट ॥



॥ अग्ने शायनमः ॥ पद ॥ माया का
 ॥ यकरी मंत्री मा ॥ स्मरता नित्य हरी
 ॥ न०५ ॥ त्रास रुपा मुकुल कहि
 ॥ ना ना ना ॥ निष्ठा विधरी ॥ १३ ॥
 ॥ शां ति दया पर अवणी साहर ॥ भे
 ॥ द९ अमाधै नवरी मुग ॥ १४ ॥ पूर्णिंग
 ॥ निजरं गिर शुनि ॥ स्त्रुतुरुपायूप
 ॥ री मुग ॥ १५ ॥ पद ॥ अति दुर्जन रथै
 ॥ वीसाया ॥ जावे गीरा रण स्त्रुतु सि
 ॥ १६ ॥ दुर्ज भक्ति वुग लकर गण
 ॥ वाग्छिति ॥ भोध्य द्यान विकायारे
 ॥ निजरि ॥ विषय स
 ॥ नवास्त्र ॥ १७ ॥ विषय वाया
 ॥ १८ ॥ स्त्रुतु ग्रहि ॥ लक्ष्मी लोक
 ॥ शुनि ॥ उत्तर ॥ लेकि तिरायारे
 ॥ १९ ॥ स्त्रुतु रथै काज नाई निभावु
 ॥ नि ॥ अं वुक आटभी नाभारे ॥ २० ॥
 ॥ पद ॥ हरितुरुपी माया हिं अनिभार
 ॥ पाहुजा लाघार न लागे ॥ रोष हि
 ॥ अमुडा कारह ॥ २१ ॥ पद ॥ मुख गुजो
 ॥ उटका मायन का ॥ उबाया परमार
 ॥ थल बका ॥ २२ ॥ लाटहुजार करे ते
 ॥ पस्ता लोहे पिष्ठ विद्युते ॥ मेकुपल
 ॥ खमो स० विद्युत ॥ २३ ॥ भिंगा डु
 ॥ क० न० ल० ब० ब० द० ॥ उरात्वर ॥
 ॥ रुद्र रुद्र ॥ ल० ब० क० ॥ ना ना रुक्ति ॥ २४ ॥
 ॥ रु ॥ क० क० रुद्रीर्म० शिरा ॥ रुद्री ॥



"Portrait of the Rajawade Jyeshodhara Mandal, Dhule and Kashwariya Chavhan Patriarch in Anubhai"

(6) ॥१॥

।।पदा।।तोपुके संगत पाई ज्ञाको पुर
 ।।नकमाई।।या ना महेविप्रामरक
 ।।वीरा।।परथी मिरावाई।।३।।स्त्रीहांसे
 ।।केभाय उसबरी किये रो।।रुद्रिमिस्त्र
 ।।चिभोगलगाई।।३।।मानपूरी प्र
 ।।भतुमुख खदाई।।उदोत्तमे उद्योत
 ।।रुद्रगाई।।३।।पदा।।श्रीसीताराम
 ।।धर्माद्यनमः।।श्रीकृष्णनमः।।
 ।।४५५॥०।।भजाये निसंगे बहुत नामि
 ।।ले।।काके पाडिले तोड़ प्रसी।।१।।
 ।।तथा यिदे संगे शुनत लासि भाषा।।
 ।।भन्न पुञ्जाया भरुक्कासी।।३।।
 ।।जिजिस्तु तिमिभन्न करवा
 ।।य।।प्राण्य
 ।।ला।।उ।।तू
 ।।हुमाग।।३।।रुलंग ईम्भरा
 ।।सि।।४।।उना।।काम ओध आड
 ।।घुडले पर्वत।।राहिता उन नंल घेन
 ।।कीकड़े।।५।।नुलं घुवे मजनु सांड घे
 ।।ज्ञाट।।दुस्तर हाथा टभु मरी का।।२।।
 ।।उत्ताके भासुज सरब जारायन।।
 ।।गेलो ऊंत रुन पांडु टगा।।३।।तुका
 ।।सुणे वृथ मोला चरीर।।गेले
 ।।हुपिच्छारक झौआला।।४॥



"Joint Project of Sanskrut Mandal, Dhule and the Vachhantrao Chavhan Library, Mumbai."

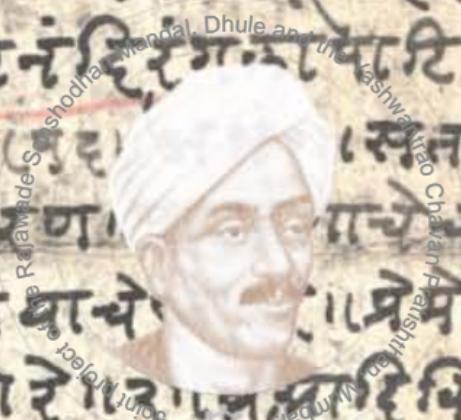
(5) ॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ पद ॥ प्रिति परि
 ॥ हरी पाई मुनारे ॥ ५ ॥ बानर देहि ॥
 ॥ सार्थ कहेचि ॥ संत समागमे राहि
 ॥ म० ॥ १ ॥ च चल हिंगति सोहु निरे
 ॥ २ ॥ स्वरूपीत नमय होई म० ॥ २ ॥
 ॥ साध भस्म रणक खरूप होसी ॥
 ॥ स्वरूपीत नमय होई म० ॥ ३ ॥ पद ॥
 ॥ जगणो हरि नै पव आहु ॥ ४ ॥ य
 ॥ महिन जगणो निय मनजा गो ॥ नेणो
 ॥ अनन्त भुपात ॥ १ ॥ सुख पदते सो
 ॥ उनिकोण ॥ राग हाय हाय
 ॥ ५ ॥ २ ॥ हेदे द्रु निसो
 ॥ नेणे जेणे ॥ जंब ॥ राय साय ॥
 ॥ ६ ॥ स्मरता त रुभ मन शारण
 ग अभिविक्षु मविधक्षय ॥ ७ ॥ पद
 ॥ हरि भजनी स्थीर हो सक मना ॥ ८ ॥
 ॥ भासाहरी व्यापक जगी त कहु नि
 ॥ स्व सुख न्यै यर हो ॥ ९ ॥ तडो किं क स
 ॥ ख सं भ्रम हातो भ्रम ॥ त्वये थ्रु
 ॥ कीट हो सु ॥ १० ॥ चित्क ख वो धा
 ॥ अं मृत पाने ॥ त्व अजरा मर हो ॥
 ॥ ११ ॥ पद ॥ मन गते सो मठा राजकोण
 ॥ अहे ॥ नाम मात्रे विजन्मजरा जाय
 ॥ हो ॥ १२ ॥ मुख फछ वरा ह पुकुजा
 ॥ १३ ॥ नारसि झं झं भतार धरि वल
 ॥ अवरिषी नुर मरुक रिव केता ॥ १४



Rajawade Sahodhan Mandal, Dhule and the Chavhan Prajatantra, Ambala

॥ मुनि भास्तर थी स्वयं प्रेसा का ॥ १९१८
 ॥ हीन बस्तक ताताय किनि पानु ॥
 ॥ परभूति गीत पविल दैव समानु ॥
 ॥ वृद्धावनी वज्री रंग्य बेणु ॥ तेण
 ॥ नादे मोहि डपा गोवी धेनू ॥ २०८
 ॥ धरी भक्ता देवूरी इसी पद्मा ॥ पु
 ॥ री सहित वैकुंठ क दाजाम ॥ भीड़
 ॥ गीचि बुद्धि वृक्ष के खट्या अरि सा
 ॥ बन राये फांन के साहो म ॥ २३८
 ॥ उन्नत कोटि अङ्गांड़ झारे नोहि
 ॥ तोहा पादे गोव की याचे पोहि ॥
 ॥ फांदे काबज्य देवूनि हाति काटि
 ॥ निजानं हि रंग दैवति वोहि ॥ ४४
 ॥ मन ॥ (पुढ़) (स्मृत न रक्षर दा)
 ॥ ये फारण ॥ गच्छ भरण ॥ ५१
 ॥ वंदुत वाचे ॥ ॥ त्रेय भावे सक
 ॥ विष्ण्या रे ॥ २३ ॥ जहुल दैकिंजे वंदि
 ॥ ले ॥ रमा हे विने चुरी ले ॥ ११८ गु
 ॥ गाक्षा गियाचे न रवी ॥ झोलि ध
 ॥ री मनि स्करवी ॥ ४८ ॥ अभंग ॥ मासे
 ॥ जीवन लुखे पाय ॥ कृष्ण लुधे मासे माय
 ॥ ३४ ॥ दिसो ने दिके विल पालनी ॥ पांडु रंगे
 ॥ लुधे ताहे ॥ २८ ॥ जिने मरणे दुस्तै हालि
 ॥ अणी कनाहि दुजिगोषी ॥ ३५ तु
 ॥ कालुणे मासा दीण ॥ लूज विष्णवा
 ॥ रिल कोण ॥ ४८ अस पूर्णं प



Rajmadae S. Shodhal, Wandal, Dhule and the
 Kashwantrao Chavan Project
 "Digitized by srujanika@gmail.com"

॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्लोऽ संगेधर्म
 ॥ पठेभधर्मविष्टे संगेविजारिपठे ॥
 ॥ संगेभक्तिजटेकुबुधीमितउपैरा
 ॥ मृतेआवठे ॥ संगेभान्निउडेविमे
 ॥ हुपठे संगेमहत्वापठे संगेपाप
 ॥ सउल्लगोनिश्चटतीसातेसंस
 ॥ गाकेडो ॥ ३ ॥ संगेवित्तपठेविरा
 ॥ रवितकेसंगेविरक्तिपके ॥ संगे
 ॥ ऐर्यटदेख ॥ रथभक्तेसंसाप्र
 ॥ भामाद्य ॥ शप्तनिगके
 ॥ विसोरु ॥ गेस्तितिको
 ॥ स्तकेसंगेकर्त्तव्यकेलुनेनिकि
 ॥ रतीसाधुजनगानेगके ॥ २ ॥
 ॥ पद ॥ पार्थसंगोक्तयरेसुगं
 ॥ मुपायरे ॥ भजनीभरुओ
 ॥ मस्तखअनुष्मपायरे ॥ ५ ॥
 ॥ अनन्यरामरेभुधुअंतःकर्णरे
 ॥ भक्तातेगोष्ठद्वजमानीचकर्णधा
 ॥ रे ॥ १ ॥ सततकीर्तिरेसुद्धायेनत्तन
 ॥ रो ॥ स्तखाचास्तकाकजपावेदावेव
 ॥ एनरे ॥ २ ॥ सकुरुनामनरेहोवू
 ॥ नीआपणरे ॥ भक्तान्निजस्तख
 ॥ दाविजादिनारायनरे ॥ ३ ॥



Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Ashwanree Chavarkar Patrika, Mumbai

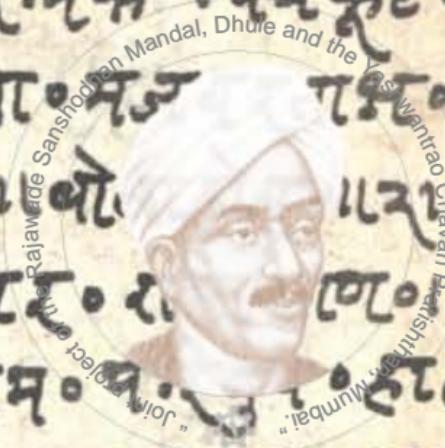
। १ अरीगणे २ रायनमः ३ अधभरतभे
 । ४ एटिलिख्यूतो ५ रा० एक्टो० ६ देवमा० म्
 । ७ पिम० मंगलस्त्रा० ८ कुरुसी० ९ १०
 । ११ स्कुमा० १२ भरतो० जंगव० शब्द
 । १३ ० । १४ उक्तपंतो० महंकारा० अतः
 । १५ स्क० पूजया० १६ अमंगा० एसेटे०
 । १७ तमाचेव० अमरलेटो० १८ देवजी० १९
 । २० रामस्तु० टेकवि० भरतावि० दुजे०
 । २१ ना० २२ । २३ सा० इतनीवा० हरखव
 । २४ भरतप्रे० आवतज्ञ० २५ अव
 । २६ हीमे० भोजनवि० दोखह० भूखी०
 । २७ वन० २८ अद्वा० आतान० बारे०
 । २९ असा० ३० छूतसेम० ३१
 । ३२ भेटताहो० ३३ टि० ३४ ३५ उक्त
 । ३६ नीदि० जाह० ३७ ३८ यात्तवम० ३९
 । ३९ सालेउ० ४० ४१ अपर्हनीके० ४२
 । ४३ केलाकु० ४४ अंगीका० धरीस्क० ४५
 । ४६ ४७ अवि० उक्तपि० सौजितमी०
 । ४८ तूजयप० आताह० ४९ । ५० केके०
 । ५१ ईत० निंतित० ५२ वलफिज० भूत्ता०
 । ५३ ईद० ५४ । ५५ हेरयूस० ५६ बिभीष०
 । ५७ दिप्लीहा० ५८ ससदकेहा० ५९ ६०
 । ६१ नो० मिआयो० सेपाक० ऐसेबो०
 । ६२ हृदृष्ट० ६३ ६४ परमसं० आण०
 । ६५ वि० ६६ अत्यंतवि० अरुपा० ६७ ६८



Rajawade Saderodhan Mandal, Dule and the Yashwantrao Chavan Pratinidhi Samiti

॥ सीते स० दिव्यसि० ॥ अष्टादश०
 ॥ बानरब० ॥ ३४॥ छपभक्त० वो
 ॥ हन्त० ॥ विभीषण० ॥ आस्तु रस० ॥
 ॥ ३५॥ अर्था० ॥ तेहुया० साहुज०
 ॥ सतु न्मे० रत्नाचलमे० ॥ ३६॥
 ॥ चढ़ती अ० कछली स० ॥ तेहेचिक-
 जे की वि० ॥ ३७॥ दावी मि० गगन-
 ॥ गख० ॥ वहवर्ण० भरतस्म० ॥
 ॥ ३८॥ ना० पश्योदेति वि० मे० कंज-
 ॥ गभू० ॥ तारा मे० ॥ कांची मध्य-
 ॥ म० ॥ ३९॥ अग्रसीलक० गाढ़व-
 ॥ क्ष० दिव्ये केना प्यव्यस्तु०
 ॥ ४०॥ द्वष्टो देहुः केति मु० ॥
 ॥ अग्रसीलक० ॥
 ॥ ४१॥ अयं स० इति रा० क्षासे०
 ॥ का० ॥ राममिंदू० ॥ ४२॥ गयं० ॥
 ॥ तत्त्विधरणिलकते पश्य अद्य-
 ॥ मूरकोयं० ॥ ४३॥ कडवी० ॥ कं
 ॥ केहुनी० रामल० हनुमं० दाख०
 ॥ अर्था० ॥ सापलतो० तीरी म० ॥
 ॥ मत्पूर्वक० ॥ यास्तु जानी मे० ॥
 ॥ ४४॥ हेवं पापुं० येधेतू० सैमि-
 ॥ अ० मूरुत्तर० ॥ ४५॥ भारद्वा० ॥
 ॥ जावूया० ॥ आस्त्रति० पूर्वी जा०
 ॥ कीम० ॥ ४६॥ वै० वदि कै अ०

॥ रामसी ॥ मग्नभर ॥ ब्रेमेक ॥ १२७
 ॥ मुणे आजी ॥ मराभा ॥ वर्णेस्त ॥
 ॥ चंद्रदाहि ॥ १२८ ॥ अमं ॥ धन्य
 ॥ मासे भाग्यधन्यमासायतन ॥ लू
 ॥ धको हेरुन आमोलिक ॥ १२९ ॥ खै
 ॥ दिताति यो गीजयाप्ते परण ॥ तो
 ॥ आजी परिषुर्णलाधको मी ॥ १३० ॥
 ॥ पद ॥ कुराळवृ ॥ मम प्राणस ॥ ५५
 ॥ गको मीच ॥ मज सादीजे ॥ गोमु
 ॥ अमवा ॥ दिवसा ॥ मजलज ॥ १३१
 ॥ मनसा ॥ ३ ॥ वनशसागे ॥ १३२ ॥
 ॥ कारनि के ॥ चित्रकूटपृ ॥ परत
 ॥ कोना ॥ मज ॥ गङ्गा ॥ सर्वस्त
 ॥ को ॥ थो ॥ १३३ ॥ पद ॥ ते
 ॥ थे भर ॥ र ॥ ४० ॥ ५५ ॥ आ
 ॥ हेकोम ॥ न ॥ ० ॥ हातीये ॥ १३४
 ॥ नेतो काळत ॥ १३५ ॥ कुणतोक ॥ १३५
 ॥ वृतसाट्टा गीजे ॥ रुडतोमे ॥ १३६
 ॥ काही उपरयन ॥ १३७ ॥ नवपंच ॥
 ॥ तदिजाणेनि ॥ धावीनि भा ॥ १३८
 ॥ उदिजिजा ॥ मीभा को ले ॥ १३९
 ॥ रित्यास्ति ब ॥ तरिहरिह ॥ १४०
 ॥ सा ॥ भाई भर ॥ कंदमूल ॥ १४१
 ॥ स्तिरिनव ॥ भूसैयापृ ॥ १४२ ॥
 ॥ कहेरामनू ॥ भरतछ ॥ कहि



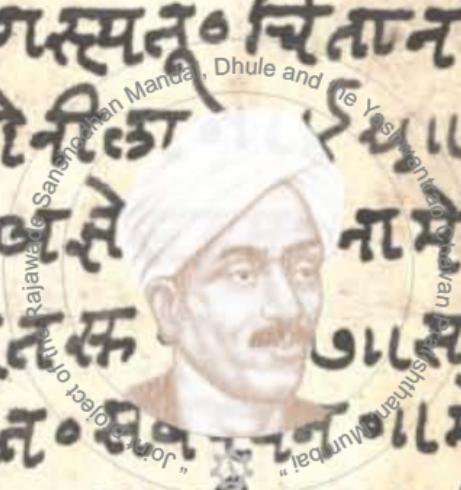
"Joint Project of Sansnodhan Mandal, Dhule and the
 Dr. Ganwantrao Chavhan Sanskriti Museum, Mumbai."

॥ ये पूर्ण हिमनसी ॥ २३ ॥ आ ॥
 ॥ मणि पवनत ॥ भरता ते स्वा ॥
 ॥ पाट विलादू ॥ कोकाचास ॥ २४ ॥
 ॥ ते पवनादू ॥ सांगो निग्र ॥ नं
 ॥ ही अमीर ॥ मनुजाकु ॥ २५ ॥
 ॥ मणि हेमम ॥ इयून दनपा ॥
 ॥ मीनजला वि ॥ मारुति नेभ ॥ २५ ॥
 ॥ नो ॥ तोहि भर ॥ मने याव ॥ श्री
 ॥ रामप्रे ॥ आस्कनि दृ ॥ २६ ॥
 ॥ कुंआसमी ॥ अंतरी आ ॥ कु
 ॥ २७ ॥ कु ॥ कु ॥
 ॥ धार ॥
 ॥ यो ॥ रावन ॥ कु ॥ कु ॥ भरमं
 ॥ भरता ॥ वायू कु ॥ और आ ॥
 ॥ रामरा ॥ २८ ॥ रामने ॥ पूर्सी ले
 ॥ कु ॥ आले होस ॥ तूला ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥ पद ॥ धरो भरतधी आ
 ॥ ये राम ॥ धार जनी य ॥ रावन
 ॥ कु ॥ अचरणरा ॥ भेरभई ब ॥ २९ ॥
 ॥ स्कगतवा ॥ जोरे हातत ॥ ३० ॥
 ॥ ब्रवान ॥ कोंनर हे बि ॥ ३१ ॥ आ
 ॥ रतभ ॥ प्रभजी य ॥ पवनतन
 ॥ मृ ॥ खूब हिक ॥ ३२ ॥ ४१ ॥ आ
 ॥ मृ ॥ ऊला श्रीरा ॥ भरतपू



The Railemade Sanskritan Mandal, Chule and the Yashwantrao Chavhan Project, Pune,
 "A Life Project"

। उज्जरहित ॥ आवृत्तीपा ॥ ४२ ॥
 । आग स ॥ कुशालीअरि ॥ ऐसेव
 ॥ देप ॥ बाटे भर ॥ ४३ ॥ अमं ॥
 । ऐकुनियाबाक्षरडेभूमीवरि ॥
 । आनंदअंतरीक्षाटकासे ॥ ४४ ॥
 । दोनीयापरेकं रीघालीमीढी ॥
 ॥ पूसतसे गोष्ठीब्रेमेभावे ॥ ४५ ॥
 । अर्ब ॥ आलींगुनी ॥ नारुति
 ॥ लाका ॥ प्राथूनिलुणेह ॥ माल
 ॥ विलिद्धो ॥ ४६ ॥ पु ॥ मदुखमा ॥
 । आगस्त्यनू ॥ चिंतानदी ॥ दैवे
 । कोटेनिला ॥ ४७ ॥ मीरयू
 । स ॥ जसे नामेकरो ॥
 । मारुतक तासा ॥ कहे
 । भरजे ॥ सा ॥ राम ॥ मेरोक्त
 । मर ॥ तवहीनू ॥ ४८ ॥ इ ॥ जी
 । लामाईल ॥ भागवदाई ॥ अ
 । रत्तछन्न ॥ आसकरेच ॥ ४९ ॥ शु
 । अमोधे ॥ आहेये ॥ कृपीकु ॥
 ॥ आटवितो ॥ ५० ॥ जटकजटकेसर ॥
 । क्षीमातातीकेकेयी ॥ बनीरामा
 ॥ लाईपाटवीली ॥ ५१ ॥ नको ॥ अ
 ॥ विस्मृ ॥ पापि नंसा ॥ रातुग्रंना ॥
 ॥ मयोध्यांके ॥ ५२ ॥ याकुपा



"Portrait of a man, likely a saint or deity, from the manuscript. He has a mustache and is wearing a turban and a white robe. The portrait is set against a background of text and is enclosed in a circular border with a decorative pattern."

१। त्यु० स्तम्भी वेना० विभीष० सा०
 २। भविष्य० ॥ पुरा० सा० भरतस्
 ३। अपने भा० कहतम० हमनेज०
 ४। पुरा० धन्यतूङा० धन्यहीतू० ॥
 ५। रामल० लेकेस्तरि० ॥ पृष्ठ० ॥
 ६। वा० श्रद्धनिभ० अभिसुख० ॥
 ७। पुरजनहु० करितिर० ॥ ५५ ॥
 ८। वसेनं दीप्ता० विनात्याच्यापा०
 ९। सबेवेताप्या० करीवाया० ५६
 १०। कोसला० देखीलाव० ॥ नृस
 ११। वस्तु० ॥ ५७ ॥
 १२। पदा० पाह० ॥ सर्वहिन्दू०
 १३। श० धर्म० ॥ १०। दोयेहीक
 १४। नेवानेअ० निजभक्त० वंदिर
 १५। जप्र० ॥ १६। अमं० ॥ अनतज०
 १७। पूष्यम० आजमीदे० पावुटके
 १८। कोणपुष्यकाभालै० आज
 १९। मीदेखीलीपावूलै० ॥ २०। चंप०
 २१। प्रणीतम० रुदस्यम० अवेष्टे
 २२। वत० नवं नवमि० ॥ २३। पृथम
 २३। अनं० सोमिग्रीस० सोपंक० ॥
 २४। तस्मैनमःस० ॥ २५। आर्या० ॥
 २५। केकेइस्तन० सिंहपक्षेतो० स्त
 २६। रुधनम्या० जरीनरीवे० ॥ २७



"Rajawade Sansodhan Mandal, Unilever Kashiwanagar, Chaurasi, Aligarh, Uttar Pradesh, India" - A circular watermark containing the name of the organization and its location.

। अग्ने रायन मः । अथ भरत ॥
 । भेटि : किरन्ते । रा० गो० । देवमा०
 । म० मूर्मि० । संगल० कुससी० ३
 ॥ स्कुमा० भरतो माण० जगव० रा०
 ॥ वद्व्रा० ॥ रु० कथं तेन० । मलं का० ॥
 । अतः स्क० । ३ । अभं० ऐसे हे० ॥ त
 । यन्दे० भरले० देवजी० । ई० राम
 । कु० ऐकबि० भरता० दूने ना० ५ ॥
 ॥ सा० इतनिबा० हरखव० भरत०
 । ए० आवतज० धि० अवहिमे० ॥
 । भेजनवि० । देवह० भूखीब० ॥
 ॥ ५ ॥ पद० ॥ आतान० बारेप्रा० ५ ॥

॥ भरतेष्टे ॥

। यमं थे० । नकल० हेसय
 । रा० मुकुभीद० ॥ ७ ॥ भरता०
 ॥ त० जरिल० कीर्ति० हेपु०
 ॥ नमाचीन० ॥ ७ ॥ चंचू० अथारि०
 ॥ लज० दिधायम० अनीयतस०
 ॥ विशंस्मह० ॥ ७ ॥ तेष्टा० जि०
 ॥ जि० मुनि० मविन० ॥ ८ ॥ भरत०
 ॥ ल० लिक्करभा० प्रोरनीप० ॥ ९ ॥
 ॥ अथ भरतभेटी अत्यानं स
 मासं ॥



"Logo depicting the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(15)

॥ पद ॥ साधु के संगत शार्दूलो को पुरन
॥ कमाई ॥ पा ॥ ना ॥ अरी ॥

॥ श्री गणेश राय नमः ॥ श्री भार्गवरा ॥
॥ मायन मृः ॥ श्री सीता रामचंद्रा ॥
॥ यन मृः ॥ पद ॥ कर साधु चा संग सु ॥
॥ ख कर क० अ० ॥ संत लति संपति जाई ॥
॥ ल संवर्ण हि ॥ गज रथ धे नु तु रंग ॥ १ ॥
॥ वस्त्रे भूषणे उन्ति केचि ॥ कोटि ल ॥
॥ छ कर पुरुंग लू ॥ ३ ॥ आत्मा रामी गु ॥
॥ ल थो धे लू ॥ ५ ॥ हि भामंग गृ ॥
॥ पद ॥ लै लै ॥ लौ ड देह रि संत
॥ प॑ ॥ अ० ॥ सं ॥ ग ए मृ भा ॥ धु गवे
॥ अंतरी मै ड ॥ लौ क॒ करि सी
॥ तू पूर्ण मुनो रथ ॥ द ड बड सी अंतरी
॥ कोड ॥ ३ ॥ अ मृ ल लु ने लू हरी भक्ता
॥ व्या ॥ से वट कर सी गोड ॥ ३ ॥ पद
॥ भावे संत समाग मे राहि ॥ न को फ
॥ लू बधी ण का हि भा ॥ अ ॥ मूर्जि
॥ मुत इ ॥ य उ य उ टे ॥ १ ॥ ज्ञा नै अ
॥ व॑ ॥ अ ग ध भि भि ॥ ३ ॥ मृ सहज
॥ व॑ ॥ अ व ग णि ग्रे ॥ ३ ॥ हा स अ व
॥ अ ग ध भि अ ॥ ३ ॥ पद ॥ संत पु दि हो
॥ तीन सख मा सं ॥ ३ ॥ धु धरती कु
॥ जे को टि लु टि ने ॥ हो सि धो र कु ली
॥ व॑ स॑ ॥ ३ ॥ अ कूला नु भ पे ॥ धु धि ज
॥ वा वि ॥ की उलि हो धूनी मिन ॥ ३ ॥

॥ उग्रेष्ठनं दस्तत्रभुवापा ॥ होर्द्विल
 ॥ लूजना भीनस ॥ ३ ॥ पद ॥ सरब
 ॥ विद्वाभगवं नतो मजदा ॥ परम
 ॥ दमाकु संततो ॥ ५ ॥ ज्यासिपाहता
 ॥ हभवनासे ॥ पाहणे सर्वहिमासे
 ॥ हो ॥ ६ ॥ सत्परमात्माजो अविना
 ॥ सी ॥ अस्त्रिविद्वस्त्रवाचाराशीतो ॥
 ॥ रमणीयनामिलोनिर्मि ॥ अद्वय
 ॥ केशवस्थामितो ॥ ७ ॥ पद ॥ भव
 ॥ सिंधुविंदुवतरे होत्यात्मा ॥ ८ ॥ ८
 ॥ स्वप्निचाग ॥ हेत्तुजागृभहो ॥ ९ ॥ स्वप्न
 ॥ पीनि ॥ १० ॥ जंगनगपा ॥ पाहतेपु
 ॥ कुभुवुक्षजी ॥ ११ ॥ निजरंगी ॥
 ॥ सत्प्रपाप्ता ॥
 ॥ पद ॥ ज्ञान
 ॥ मातीरे ॥ पा
 ॥ तीरे ॥ १२ ॥
 ॥ ज्याचारे ॥ भारकरकरिनसंगत्या
 ॥ चारे ॥ ज्याचासंगकरिताभवजा
 ॥ यरे ॥ अहुनंदाकारणेत्याचेपुम
 ॥ रे ॥ १३ ॥ अत्मारामानिःकामधामपा
 ॥ हिरे ॥ कृष्णेकेशवत्याविषेसरवाना
 ॥ हिरे ॥ १४ ॥ पद ॥ साधुसंतमहामेह
 ॥ ज्ञातीरे ॥ अहुश्चार्थ्यनेबुनीजीवये
 ॥ तीरे ॥ १५ ॥ जीवयेबुनीनुसोडित्या
 ॥ चात्मागरे ॥ पाटिमोरे वृद्धत्यान्ति
 ॥ सोंगरे ॥ १६ ॥ भोक्त्रेभाविकदेव्यो

Digitized by Rajawade Sansodhan Mandai, Dhule and the Kshwantrao Chavhan Peeth, Mumbai, Maharashtra, India

॥ निहुकुचुकानिरे ॥ गोदी सांगुवेस
 ॥ जीत्वा धीष्टनीरे ॥ ३ ॥ कास्मेकरहि
 ॥ सृती बरीभोकेरे ॥ जेतेजाबुभीपाई
 ॥ मान्यासोकेरे ॥ ३ ॥ निजानंदिरंग ॥
 ॥ इष्टूणीनंदरे ॥ पाडिमेलालागलाये
 ॥ गायोगरे ॥ ४ ॥ पुरुजमंग ॥ सज्ज
 ॥ नाचासंगभाषा सर्वकाळ ॥ दूर्जन्या
 ॥ पुरुन्दरोदेवा ॥ १ ॥ उरुभादकाचिहि
 ॥ नतीभावना ॥ नकोनारायणासंग
 ॥ मान्या ॥ ३ ॥ अपविश्वाणीनायका
 ॥ विकानी ॥ नसत्ताचिमनीसीणहोय
 ॥ ३ ॥ तूकासुमेष्टकरावंडरीराजा
 ॥ सत्ताचिमाइ नभो ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ ॥
 ॥ देवथवया लेसुख०देवा
 ॥ पु० ॥ ३ ॥ ह० नहोउरं० ॥ ३ ॥
 ॥ तूकासु ॥ ० ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ पाय
 ॥ लें० ॥ जेणेदेवया ॥ ३ ॥ कर्तिसां० जावे
 ॥ जावेसं० ॥ ३ ॥ संतरु० ॥ वहूताभें०
 ॥ ३ ॥ तूकासुष्णेसंत० मास्याष० ॥ ४ ॥ ५
 ॥ अमं० ॥ संततेचिजाणाजगी ॥ क्ष
 ॥ मादमादुमन्येउरंगि ॥ १ ॥ लोभभहं
 ॥ तानवेसुना ॥ जगीविरक्ततेचिजाणा
 ॥ ३ ॥ इहपरलोकीस्कल्पी ॥ सुभक्षानु
 ॥ मान्येकरबी ॥ ३ ॥ मिथाकल्पुना ॥
 ॥ मागेसारा ॥ ६ ॥ तादिब० ॥ ४ ॥ अस
 ॥ अबैंभोरपालील्याभागा ॥ त्यान्येडोई
 ॥ जटाअसोनसो ॥ १ ॥ मुनान्यानिर्म
 ॥ लभान्येनारसाक ॥ त्यान्येगजासाक
 ॥ उरसोनसो ॥ ३ ॥ दुरस्त्रीदेखोनिजो



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com